(3)

GREENLAWNS HIGH SCHOOL
TERMINAL EXAMINATION 2017-18

SUB : HINDI | **CLASS : IX**
TIME : 3 HOURS | **MARKS : 80**

Answer to this paper must be written on the paper provided separately. You will not be allowed to write during the first 10 minutes. This time is to be spent in reading the question paper. The time given at the head of this paper is the time allowed for writing the answers.

This paper comprises of two section: Section A and Section B.

Attempt all the questions from section A attempt any four questions from section B. answering at least one question each from the two books you have studied and any two other questions.

SECTION – A (40 Marks)

प्रश्न १. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग २५० शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए। (१५)

१) सैनिक सीमा के प्रहरी ही नहीं बल्कि राष्ट्र भक्त भी होते हैं। सैनिक शिक्षा की आवश्यकता बताते हुए भारतीय सैनिकों की भूमिका युध्द के समय क्या होती है, वर्णन कीजिए।

२) "अहंकार से वृध्दि रुक जाती है।" इस सिध्दांत को अपने जीवन के किसी प्रसंग के उल्लेख से स्पष्ट कीजिए।

३) आज के युग में व्यक्ति को पुरानी परम्पराओं की विचारधाराओं से हटकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

४) 'कर भला हो भला' को आधार मानकर एक मौलिक कहानी लिखिए।

५) दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए तथा इस पर आधारित कोई घटना या कहानी लिखिए। लेकिन इसका सीधा संबंध चित्र से होना चाहिए।

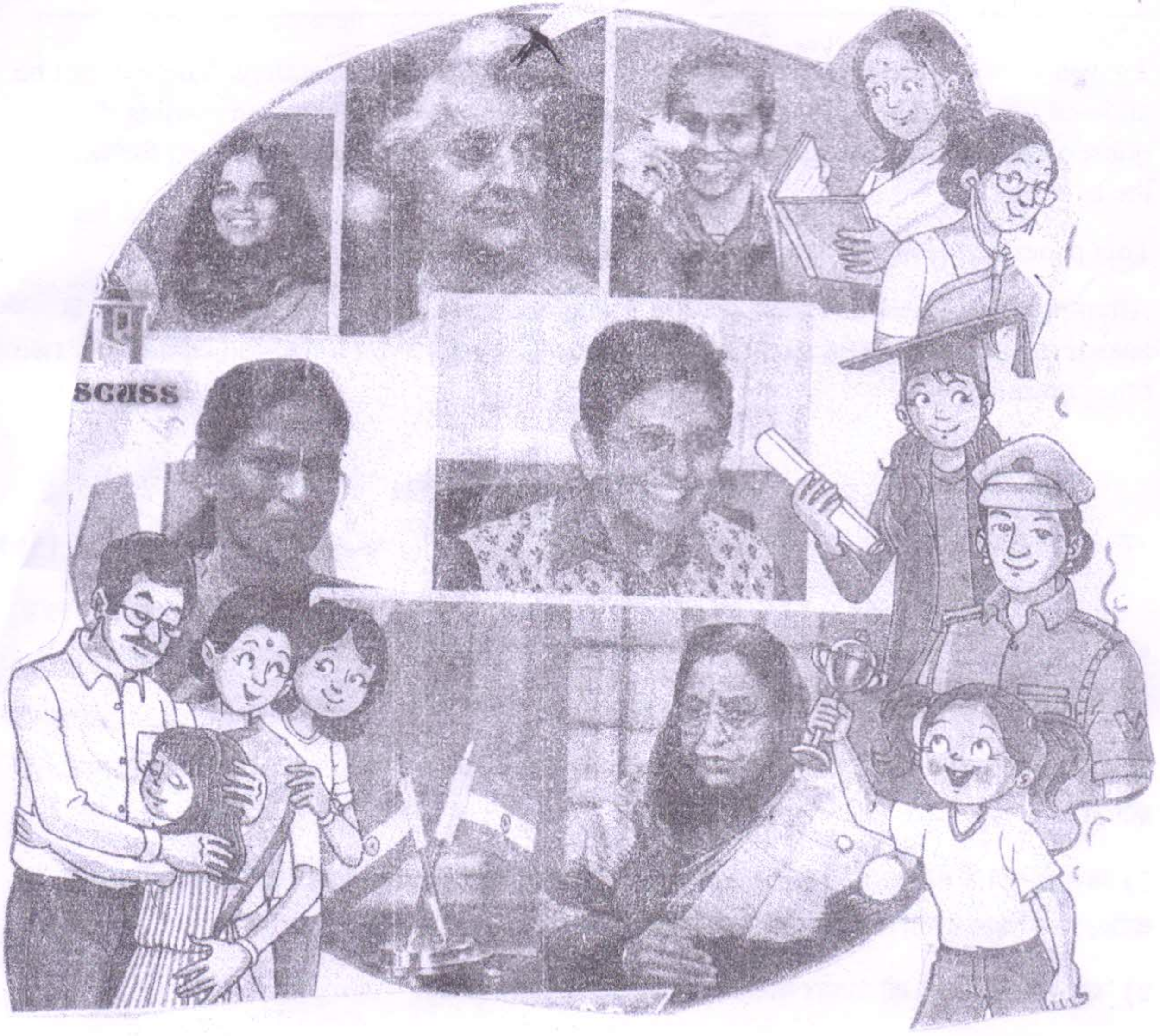

प्रश्न २. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लिखिए। (७)

१) सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान बहुत बढ़ गया है, जो सभी के लिए हानिकारक है। इसे रोकने और सरकारी तंत्र का ध्यान आकर्षित करने हेतु 'नवभारत टाइम्स' के संपादक को एक पत्र लिखिए।

अथवा

२) बड़ी बहन को पत्र द्वारा सूचित कीजिए कि आप हाईस्कूल पास करने के बाद लघु उद्योग (small industry) को आरंभ करने का निश्चय कर चुके हैं।

...3/-

प्रश्न ३. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए।
उत्तर यथासंभव आपके शब्दों में होने चाहिए।

समुद्र –मंथन की कथा बहुत पुरानी तथा अर्थपूर्ण है। यह वाल्मीकि-रामायण, महाभारत , श्रीमद् भागवत, स्कंदपुराण आदि कई ग्रन्थों में आई है।

देव और दानव अमृत पाकर अमर हो जाना चाहते थे। उन्होंने वासुकि साँप की रस्सी और मंदर पहाड़ की मथानी बनाया और मिलकर समुद्र का मंथन शुरु किया। मथे जाने पर समुद्र ने भयंकर विष ––-हलाहल–उगल दिया, जिससे तीनों लोक जलने लगे। देव और दानव पहुँचे महादेव शिव की शरण में, जिन्होंने विश्व –मंगल के लिए उस विष को अपने कंठ में धारण कर लिया।

मंथन फिर शुरु हुआ। समुद्र में से एक-एक करके अनेक अनमोल वस्तुएँ निकली –उच्चैःश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, आठ दिग्गज और उनकी हथिनियाँ, कौस्तुभ- मणि, पारिजात वृक्ष, अप्सराएँ, लक्ष्मी, वारुणी— लगभग सभी चीजें देवों ने ले लीं। दानवों ने इसकी चिन्ता भी नहीं की। अन्त में प्रकट हुए आयुर्वेद के अधिष्ठाता धनवन्तरि –हाथ में अमृत-भरा स्वर्ण- कलश लिए। फौरन देवों–दानवों में छीना-झपटी शुरु हो गयी अमृत के लिए।

तब विष्णु ने मोहिनी का रुप धारण किया और माया से अमृत का कलश अपने काबू में कर लिया। फिर देवों-दानवों को अलग-अलग पंक्तियों में बिठाकर सारा अमृत देवों को पिला दिया। स्वर्भानु दानव चालाकी से देवों के बीच बैठकर कुछ अमृत पी गया, परन्तु सूर्य और चन्द्र ने उसे पहचान कर विष्णु को इशारा कर दिया और विष्णु ने चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। वह कटा हुआ सिर राहु बनकर सूर्य-चन्द्र को ग्रसा करता है। वह उनके रक्त का प्यासा है।

पुराण-युग कभी का बीत चुका, किन्तु छल और बल की वही परम्परा इस देश की समाज –व्यवस्था में चिरकाल से चली आ रही है। यहाँ दो पंगते हैं। एक में बैठती हैं 'ऊँची, जातियाँ, दूसरी पंगत 'नीची' जातियों की है। हजारों वर्षो से समाज का सारा अमृत 'ऊँची' जातियों की पत्तलों में पड़ता आ रहा है– अमृत अर्थात् सम्मान, सत्ता, आर्थिक साधन, विद्या-विज्ञान, लाभकारी धंधे-पेशे–और चूँकि इनके बीच कोई शिव नहीं है, इसलिए लगभग सारा ही 'विष' 'नीची' जातियों को जबरन पिलाया जाता है: विष अर्थात् असम्मान, सत्ताहीनता, साधनहीनता, अविद्या आदि!

नीची जातियाँ अब और विष पीने से इन्कार करने लगी हैं और अमृत में अपना एक निश्चित हिस्सा माँगने लगी हैं तो 'ऊँची' जाति वाले 'अन्याय!अन्याय!' चिल्लाने लगे हैं। जब तक भेदभाव हमारे लिए लाभकारी हो, वह क्षम्य है, ब्रह्मा का विधान है; मगर दूसरे के हित में किया गया तनिक सा भी भेदभाव अन्याय है।

१) समुद्र मंथन की कथा किन किन ग्रंथों में पायी जाती है ? समुद्र मंथन किस प्रकार किया गया ? (२)

२) समुद्र मंथन से क्या-क्या वस्तुएँ निकली ? (२)

३) हलाहल विष का पान शिव ने क्यों किया ? (२)

४) विष्णु ने अमृत का बँटवारा किस प्रकार किया ? (२)

५) आधुनिक युग में कौन सी प्राचीन प्रथा अभी भी चली आ रही है ? (२)

प्रश्न ४. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए।

१) निम्नलिखित शब्दों के भाव वाचक संज्ञा शब्द लिखिए। (१)

क) देव ख) मज़दूर

२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। (१)

क) तरुण ख) भीरु

३) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए। (कोई एक –दो) (१)

क) सर्प ख) तालाब

४) निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए। (१)

क) शास्त्र ख) मुख

५) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए: (१)

१) गुदड़ी का लाल २) हथियार डालना

६) कोष्ठक में दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए। (३)

१) इस पत्रिका का वार्षिक शुक्ल क्या है ?

(रेखांकित शब्द के स्थान पर सही शब्द लिखिए।)

२) अपने कर्त्तव्य से मुख न मोड़ो।

(बिना अर्थ बदले 'न' को हटाइए)

३) सच्चे मित्र कठिनाई से मिलते हैं।

(रेखांकित शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिए।)

Section – B (40 marks)

Attempt four questions from this section. You must answer at least one question from each of the two books. You have studied and any two other questions.

साहित्य सागर

प्रश्न ५. ''न जमीन पर फर्श था न दीवारों पर तस्वीरें। यह एक सीधा-साधा देहाती गृहस्थ का मकान था।

१) 'देहाती' शब्द का अर्थ बताइए? यहाँ किस देहाती घर की बात हो रही हैं? समझाइए। (२)

२) इस घर में किस परिवार की किस लड़की का विवाह हुआ? विवाहिता का अपना घर कैसा था? (२)

३) आनन्दी की मनोदशा का वर्णन करते हुए बताइए कि क्या आनन्दी का समझौता करना उचित था? (३)

४) प्रस्तुत कहानी का संदेश अपने शब्दों में लिखिए। (३)

प्रश्न ६. उन दिनों एक प्रथा प्रचलित थी कि यज्ञों का क्रय –विक्रय हुआ करता था। छोटा-बड़ा जैसा यज्ञ होता तदानुसार उसका मूल्य मिल जाता।

क) 'प्रथा' से आप क्या समझते हैं ? यहाँ किस प्रथा की बात की जा रही है ? (२)

ख) 'यज्ञों के फल' से आप क्या समझते हैं ? यज्ञों के क्रय-विक्रय से क्या फायदा होता था ? (२)

ग) किसको व क्यों यज्ञ बेचने की जरुरत आ पड़ी थी ? उसका परिचय दीजिए। (३)

घ) 'महायज्ञ का पुरस्कार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिध्द कीजिए। (३)

प्रश्न ७. ''परंतु आदमी नहीं देवता है! ईश्वर उसका भला करे।''

क) वक्ता कौन है ?उसने यह वाक्य किसके लिए कहा है ? ऐसा क्या हुआ था जिससे वह वक्ता का नजर में देवता बन गया था ? (२)

ख) वक्ता तथा 'उस आदमी' के आपसी सम्बन्ध कैसे थे ? वक्ता के इस कथन द्वारा उसके चरित्र के किस गुण का पता चलता है ? (२)

ग) उक्त आदमी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके चारित्रिक गुणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (३)

घ) प्रस्तुत कहानी पाठकों के मन पर किस प्रकार अपना प्रभाव छोड़ जाती है, यह स्पष्ट करते हुए कहानी से मिलने वाले संदेश पर प्रकाश डालिए। (३)

साहित्य सागर (पदय विभाग)

प्रश्न ८. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

ऐसो को उदार जग माही।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोऊ नाहीं।
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी
सो गति देत गीध, सबरी कहूँ प्रभू न बहुत जिय जानी।
जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहँ लीन्हीं।
सो संपदा बिभीषन कहँ अति सकुच सहित प्रभु दीन्ही।
तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम, काम सब पूरन कर कृपनिधि तेरो।

१) 'बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोऊ नाहिं'। पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। (२)

२) 'गीध' कौन था ? उसका जिक्र यहाँ किस सन्दर्भ में किया गया है ? (२)

28/9/17
I session

३) प्रस्तुत पद का केन्द्रीय भाव लिखिए। (३)

४) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए। (३)

सरिस, कृपानिधि, सिव, सकल, अरप, चाहसि

प्रश्न ९ निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पेड़ झुक झाँकने लगे गर्दन उचकाये आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी घूँघट सरके।

१) पेड़ों के झुकने, झाँकने और गर्दन उचकाने का क्या कारण है ? समझाकर लिखिए। (२)

२) कवि ने आँधी और धूल का वर्णन किस रूप में किया है ? मेघों के आगमन पर वे क्या कर रही हैं ? (२)

३) कौन ठिठक गया है ? वह बाँकी चितवन से किसे देख रहा है ? 'घुँघट सरके' से कवि का क्या तात्पर्य है ? अपने शब्दों में लिखिए। (३)

४) 'मेघ आए' कविता में 'मेघ' शब्द किसका प्रतिक है ? कविता ग्रामीण-संस्कृति की मनोहारी झलक किस प्रकार प्रस्तुत करती है ? समझाकर लिखिए। (३)

प्रश्न १०. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रभु के दिए हुए सुख इतने
हैं विकीर्ण धरती पर
भोग सकें जो उन्हें जगत में
कहाँ अभी इतने नर ?
सब हो सकते तुष्ट, एक सा
सब सुख पा सकते हैं
चाहे तो पल में धरती को, स्वर्ग बना सकते हैं।

१) इस पद्यांश में कहाँ क्या बिखरे होने की बात की गई है ? समझाइए। (२)

२) 'सब हो सकते हैं तुष्ट' पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि ऐसा किस तरह सम्भव हो सकता है ? (२)

३) 'चाहें तो' शब्दों का प्रयोग कवि ने किस संदर्भ में किया है ? इसके लिए हमें क्या-क्या करना होगा ? (३)

४) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए – (३)

विकीर्ण, भोग सकें, तुष्ट, पल , जगत, नर